गोयल
कॉमिक्स
44 मूल्य : 5.00
साहसी
मधुमास
Scan & editing
by
Rahul Dubey

गोयल कॉमिक्स

के इस सैट के नये कॉमिक्स

पिलपिली साहब और चरस के रसगुल्ले

साहसी मधुआरा

5/- प्रत्येक

लाल लंगूर की लंगोटी

भूत तांत्रिक का अंत

प्रकाशक :
गोयल पाकेट बुक्स १/, बापू मार्किट, गांधी ग्राउण्ड, फव्वारा, दिल्ली-6

सम्पादकः ओम प्रकाश गोयल, प्रकाशकः गोयल पॉकेट बुक्स ९।,
गांधी ग्राउंड फव्वारा दिल्ली-6

साहसी मछुआरा

लेखकः हनीफ अजहर
चित्रकारः मनवेश दत्त

बहुत समय पहले की बात है। मगध देश के एक गांव में बसन्त नाम का एक युवक रहता था। बसन्त का कोई रिश्तेदार तो था नहीं। मां-बाप न होने के कारण उसे गाँव वालों ने ही पाला था। बड़ा हुआ तो बसन्त गाँव के किनारे ही झोपड़ी डालकर रहने लगा।

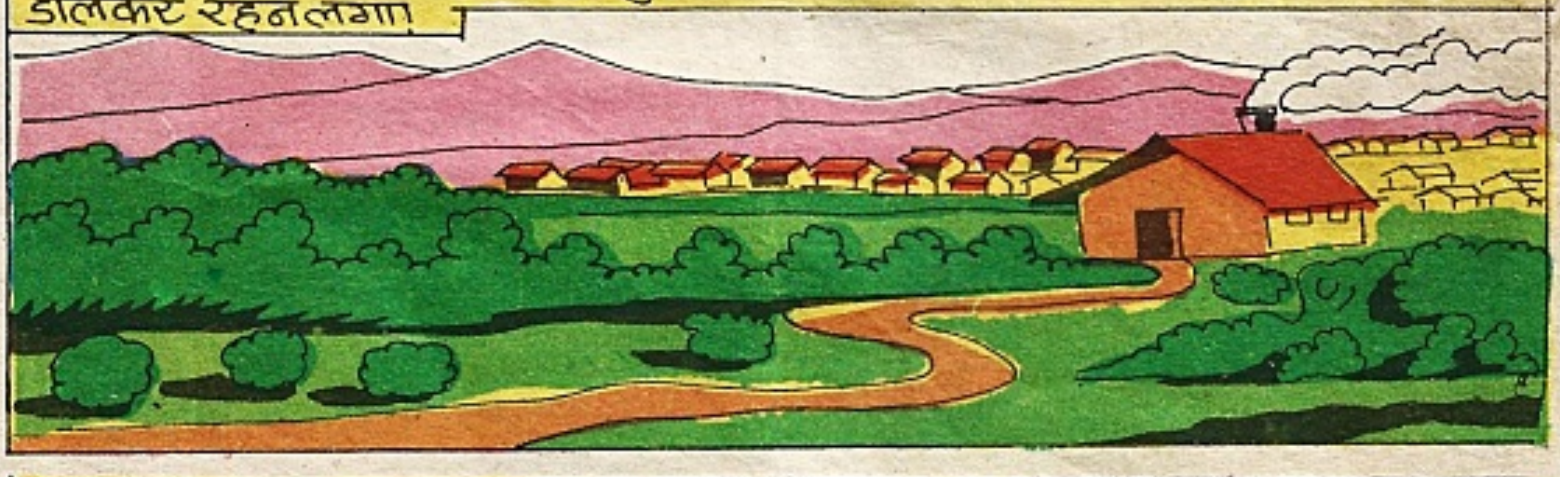

अपना पेट पालने के लिए बसन्त दिन भर गाँव से दूर स्थित नदी पर मछलियां पकड़ता....

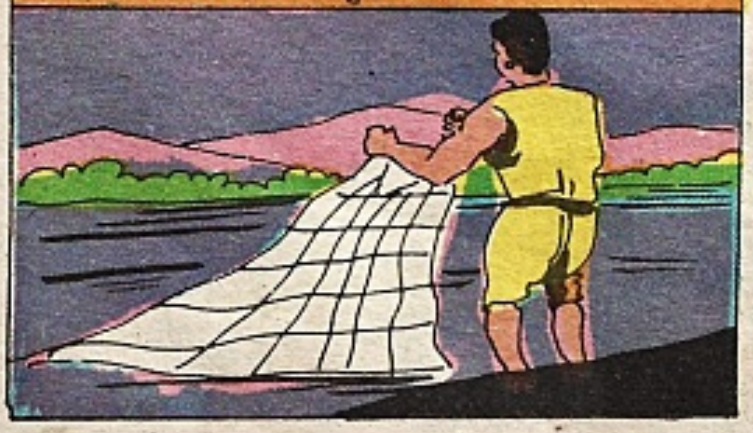

और शाम को गाँव के बाज़ार में जाकर मछलियां बेच देता।

एक दिन जब बसन्त नदी के एक सुनसान किनारे पर बैठा मछलियाँ पकड़ रहा था। तो उसे दूर से एक नाव आती दिखाई दी। बसन्त का माथा ठनका।

किसी अज्ञात शंका से भयभीत होकर बसन्त तुरन्त मछलियाँ पकड़ना छोड़कर पास की ही झाड़ियों में छुप गया।

बसन्त जहाँ छिपा था। नाव उसके थोड़े ही फासले पर आकर रुकी।

तभी सैनिकों ने नाव में रखी एक बोरी उठायी। और नदी में फेंकने लगे।

Scan & editing by Rahul Dubey

थोड़ी देर की मेहनत के बाद आखिर बसन्त बोरी को किनारे की ओर ले ही आया।

बसन्त बोरी को घसीटता हुआ। नदी के किनारे से दूर सूखे स्थान पर ले आया।

बसन्त ने बोरी का मुंह पूरी ताकत से खोलना शुरू कर दिया।

और जब बोरी खुली तो बसन्त को चक्कर आ गया।

आश्चर्य से भरे बसन्त ने उस देह को पत्थर से मुक्त किया। और उसका निरीक्षण करने लगा।

बसन्त ने उस मानव देह के पेट में से पानी निकाला और उसे छुप में पेट के बल लिटा दिया।
अब मुझे इसके होश आने का इन्तज़ार करना चाहिए होश में आने के बाद ही पता चलेगा। आखिर कौन है?
काफी देर इन्तज़ार करने के बाद यह देखकर बसन्त की खुशी का की सीमा न रही कि उस मानव को धीरे-२ होश आने लगा था।
ओह! यह ठीक हो रहा है।
पूरी तरह होशो-हवास में वापस आते ही वह मानव एक झटके से उठकर खड़ा हो गया।
मैं.. मैं.. मैं.. कहाँ हूँ? और तुम कौन हो?
आप इस समय ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे स्थित जंगल में हैं। मान्यवर! मेरा नाम बसन्त है। और मैं मधुआरा हूँ
मैं यहाँ कैसे?
और फिर बसन्त ने उस मानव को पूरी घटना उसे कह सुनाई।
क्या?
जी, मान्यवर मैं सही कह रहा हूँ!

मानव के दिमाग पर जोर डालते ही पिछली सारी घटना चलचित्र की भान्ती उसके मस्तिष्क में घूम गई।
ओह! हाँ कुछ याद-सा आ रहा है।
क्या तुम जानते हो बसन्त हम कौन हैं?
जी नहीं, आपके बिना बताये मैं भला कैसे जान सकता हूँ! कि आप कौन हैं?
तो सुनो युवक मैं मगध देश का राजा वीरसेन हूँ।
क्या महाराज वीरसेन अ..आप?
परिचय जान कर बसन्त का मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया!
हाँ युवक हम मगध देश के राजा वीरसेन हैं। तुमने हमारी जान बचाकर हम पर बहुत बड़ा अहसान किया है!
यह तो मेरा फर्ज था..पर इस घटना का कारण।
यह सब षडयन्त्र है। बसन्त तुम नहीं समझोगे। बस इतना जान लो मेरी मृत्यु का साधन उन्हीं लोगों ने किया। जो मुझे अधिक प्रिय थे।
अब आप क्या करेंगे महाराज!
सबसे पहले तुम्हें इस बात को गुप्त रखना होगा।

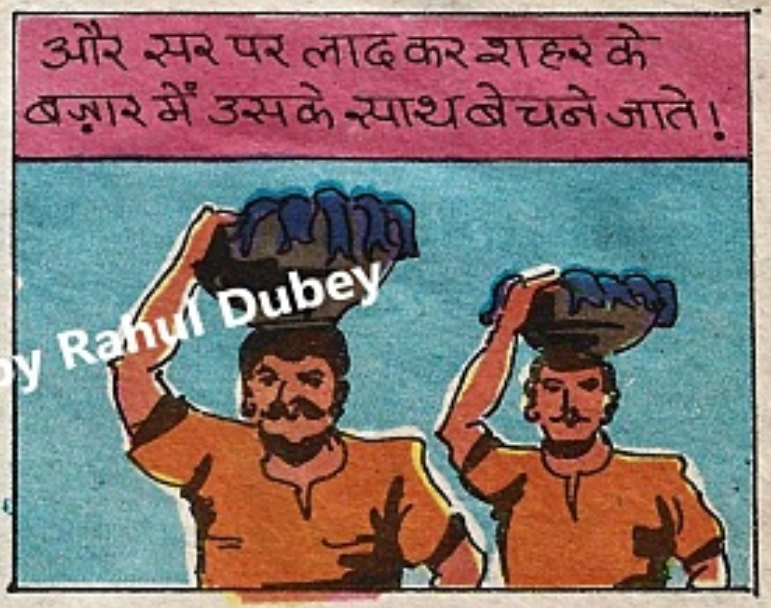

Scan & editing by Rahul Dubey

उधर मगध देश के राजमहल में।...
हा-हा-हा-हा.. आखिर हमने चाल चलकर वीरसेन को मार ही डाला। अब कुछ ही दिनों बाद मैं राजा बनूंगा और तुम मेरी रानी!
अभी थोड़ा और इन्तज़ार करो प्रिया शक्ति सिंह। अगर हमने अभी तुम्हें राजा घोषित किया तो प्रजा समझेगी कि हमने जान बूझ कर अपने पति राजा वीरसेन को मार डाला। हम यह घोषित करेंगे की शिकार खेलते समय शेर ने उन्हें मार डाला!

सब तुम्हारी कृपा है महारानी जो हम अपने भाई की मृत्यु के बाद मगध देश के राजा बन रहे हैं।
ओह प्रिय!
इधर वीरसेन को मरवाने वाला शक्ति सिंह यह ख्वाब देख रहा था और...

इधर वीरसेन भी चुप नहीं बैठे थे।
बसन्त मुझे यहाँ आये दो महीने गुजर चुके हैं। अब मुझे राजमहल की खबर लेनी चाहिए?
ठीक है महाराज!

सबसे पहले हम कुछ ऐसा करना है। जिसकी वजह से हमें राजमहल में पलते षडयन्त्र की पल-पल की खबर मिल सके। इसके लिए तुम राजमहल में नौकरी पा लो। कैसे भी?
लेकिन महाराज मैं राजमहल में नौकरी पाऊंगी कैसे?

उसका भी इन्तज़ाम है मेरे पास, कल भोर होते ही तुम अपनी मछलियों का टोकरा-लेकर राजमहल में पहुँच जाना। वहां तुम महारानी रूपा को मेरी यह अंगूठी दिखा कर कहना कि यह तुम्हें मछली के पेट से मिली है। और उसे मेरी मृत्यु का..
..पूरा यकीन हो जायेगा। और वो खुश होकर तुम्हें राजमहल में अवश्य नौकरी दे देंगी।
ठीक है महाराज, जैसा आप उचित समझे, मैं आप के कहे अनुसार कल राजमहल को चला जाऊंगा।
अगले दिन सुबह ही बसन्त अपनी मछलियों का टोकरा लेकर राजमहल की तरफ चल पड़ा।..
जाओ बसन्त। मगर एक बात का ख्याल रखना मेरे बारे में किसी को जरा सी भनक भी न पड़े यहाँ तक कि राजकुमारी कचंना को भी नहीं पता चलना चाहिए!
उधर राजमहल में राजा वीर सेन की पुत्री कचंना महारानी रूपा से कुछ पूछ रही थी।
माता जी दो महीने होने को आये, गुप्तचर पूरे राज्य का चप्पा-२ छान चुके हैं। मगर अभी तक पिता जी का पता नहीं चला।
मैं खुद सोच में हूं महाराज शिकार का कह कर गये थे। मगर अभी तक नहीं लौटे। कुछ बुरा न घट गया हो महाराज के साथ!

महारानी रूपा की बात सुनकर राजकुमारी कंचना चिन्ता मग्न हो गई।
कहीं ऐसा तो नहीं मेरी इस सौतेली माँ ने पिता जी के विरुद्ध कोई षडयन्त्र रचा हो।
तभी एक दासी अन्दर प्रविष्ट हुई।
महारानी की जय हो। बाहर एक युवक मछुआरा आया है। वह कहता है कि उसके पास आपको दिखाने के लिए एक बहुत ही खास चीज़ है।
अच्छा उसे तुरन्त ही हमारे पास भेजो!
आदेश पाकर दासी चली गई....
और जब वापस आई तो बसन्त उसके साथ था।
कहो युवक क्या खास चीज है। जो तुम हमें ही दिखाना चाहते हो?
महारानी की जय हो! मैं एक मछुआरा हूँ।
बसन्त ने राजा वीरसेन द्वारा दी अंगूठी महारानी रूपा के आगे प्रस्तुत कर दी।
कल जब मैंने एक नदी से पकड़ी मछली का पेट काटा तो उसके पेट में से यह अंगूठी निकली।
अंगूठी देखते ही महारानी और राजकुमारी कंचना एक साथ चौंक पड़ी।
यह अंगूठी तो महाराज की है।
सुनते ही महारानी रूपा बोल उठी।
तो इसका मतलब यह हुआ कि महाराज अब इस दुनिया में..
अपना वाक्य जानबूझकर अधूरा छोड़कर महारानी रूपा दहाड़ें मारकर रोने का नाटक करने लगी।..
हाय स्वामी।
क्या संवाद है।

राजकुमारी कंचना का भी रो-रो कर बुरा हाल था....

हाय! पिता जी..

राजकुमारी का प्रलाप देखकर मन चाहता है कि इन्हें सारी हकीकत बता दूं!

यह सब देखकर दासी बोली....

देखो युवक, इस समय तुम्हारा यहाँ ठहरना उचित नहीं! अच्छा होगा अगर तुम राजमहल के अतिथी गृह में चले जाओ!

जी, जैसा उचित समझे!

राजकुमारी को अकेला उसी कमरे में रोता छोड़कर महारानी अपने निजि कक्ष में चली गई। और बसन्त अतिथि गृह की तरफ रवाना हो गया।

जाने बेचारी राजकुमारी का रोते-रोते क्या हाल होगा। मुझे इसे सारी हकीकत बतानी ही होगी।

उसी रात को अतिथि गृह की खिड़की से एक साया निकलकर..

तेजी से बचता हुआ राजमहल की तरफ बढ़ रहा था।..

राजमहल के पिछवाड़े एक सुनसान कोने में पहुँच कर साये ने एक रस्सी उछाल दी!

Scan & editing by Rahul Dubey

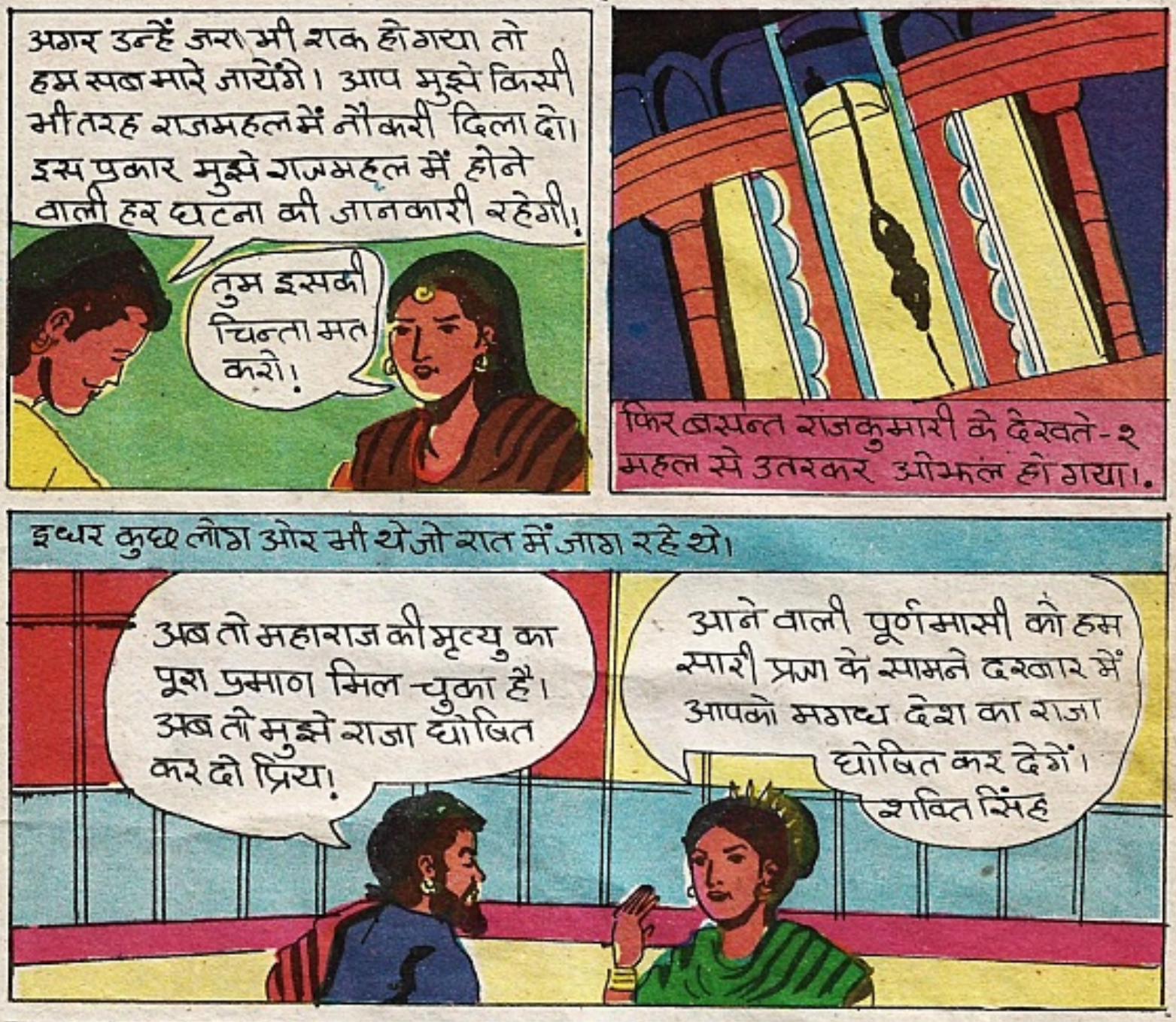
अगर उन्हें जरा भी शक हो गया तो हम सब मारे जायेंगे। आप मुझे किसी भी तरह राजमहल में नौकरी दिला दो। इस प्रकार मुझे राजमहल में होने वाली हर घटना की जानकारी रहेगी।
तुम इसकी चिन्ता मत करो।
फिर बसन्त राजकुमारी के देखते-२ महल से उतरकर ओझल हो गया।
इधर कुछ लोग ओर भी थे जो रात में जाग रहे थे।
अब तो महाराज की मृत्यु का पूरा प्रमाण मिल चुका है। अब तो मुझे राजा घोषित कर दो प्रिय!
आने वाली पूर्णमासी को हम सारी प्रजा के सामने दरबार में आपको मगध देश का राजा घोषित कर देंगे। शक्ति सिंह
लेकिन अभी हमारे बीच में राजकुमारी कचंना नाम की एक अड़चन और है महारानी!
तुम चिन्ता मत करो शक्तिसिंह! इसका भी उपाय होगा।
इनकी ये बातें बसन्त एक दीवार के कोने में खड़ा सुन रहा था
ओह, तो ये चक्कर है.. लेकिन मेरे होते ऐसा नहीं होगा! महाराज को खबर देनी चाहिए!

अगले दिन राजकुमारी कंचना ने रूपा से कहकर बसन्त की नौकरी अस्तबल में लगा दी।

मौका मिलते ही बसन्त ने राजकुमारी कंचना को रात वाली सारी बात बता दी।

अगले दिन राजकुमारी ने रूपा से घुड़सवारी करने का बहाना कर बसन्त को साथ लिया और दोनों दो घोड़ों पर बैठ कर नदी की तरफ चल दिए!

काफी देर घोड़ा दौड़ाने के बाद बसन्त राजकुमारी कंचना को अपने घर लेकर पहुँचा। वहाँ काम करते वीरसेन पर जैसे ही राजकुमारी की नज़र पड़ी वह घोड़े से उतर कर उसकी तरफ दौड़ पड़ी!

अपने पिता से मिलने की खुशी में राजकुमारी बहुत देर तक वीरसेन से चिपट कर रोती रही। काफी देर बाद जब वह चुप हुई तो....

Scan & editing by Rahul Dubey

वो किस तरह महाराज!
मैं अपने पड़ोसी मित्र राजा चन्द्रदेव से आज ही सम्पर्क करता हूँ। इधर तुम और कंचना मिलकर राज्य की प्रजा और सैनिकों से मेरे प्रति राय पूछो!
जी महाराज
अब तुम दोनों वापस राजमहल लौट जाओ कहीं तुम्हें ज्यादा देर हो गई तो बेकार में रानी रूपा तुम पर सदेंह करेगीं!
और राजकुमारी कचंना और बसन्त ने महाराज वीरसेन को प्रणाम किया और घोड़ों पर सवार होकर वापस राजमहल की तरफ चल पड़े।
अच्छा पिताजी!
अपना ख्याल रखना पुत्री!
राजमहल में रोज बसन्त दिन भर घोड़ो की सेवा करता रहता!
और रात को मौका मिलते ही एक कम्बल लेकर प्रजा के लोगों से राजा के बारे में पूछने चला जाता!
वीरसेन के बाद आप क्या महसूस करते हैं।
हमारे तो देवता चले गए भाई..! क्या बतायें!

प्रजा के लोगों का कहना ठीक था क्यों कि अब राज्य के सैनिक मनमाने ढंग से लोगों पर जुल्म ढा रहे थे।....
हा..हा.. हा.. हा..!
हः..हः हः..हः!
लोगों से मनमाने ढंग से लगान और टैक्स वसूला जाता!
रहम शक्ति सिंह मेरे बच्चे भूखे मर जायेंगे!
हमें लगान चाहिए!
जो लोग इस जुल्म के खिलाफ आवाज़ उठाता उसे कड़ी सज़ा दी जाती!
आाह!
हे भगवान इतना अन्याय! अगर महाराज ने जल्द ही कुछ नहीं किया तो इस राज्य का तो भगवान मालिक है।
हा..हा..हा.. हा.. हा..हा..!
सड़ाक
सड़ाक

इधर राजा वीरसेन अपने पड़ोसी मित्र राजा के पास पहुँच चुका था..
अरे वीरसेन तुम!
हाँ, मित्र-चन्द्रदेव मैं ही हूँ.. वीरसेन!
लेकिन तुम तो मर चुके...?
तुमने जो कुछ भी सुना वह झूठ था मेरे दुश्मनो ने मुझे मरवाने की कसर नहीं छोड़ी!
मामला क्या है। मित्र! तुम मुझे जरा विस्तार से बताओ! सब कुछ बताओ!
फिर राजा वीरसेन ने चन्द्रदेव को अपनी पूरी कहानी कहनी शुरू की!
आईये-२ महाराज आप की प्रतिक्षा करते-२ मैं थक गई।
अच्छा ऐसी क्या बात है। प्रिय!
वो बात ये है। महाराज की मेरे भाई ने मेरे लिए एक खास प्रकार की मदिरा भिजवाई है। मैं आपको वो मदिरा पिलाना चाहती थी!
ओह, तो चलो! देखते हैं।

मैं उस दुष्ट रानी की चिकनी चुपड़ी बातों में आ गया और उसके साथ राजमहल में पहुँच गया!
आज मैं आपको अपने हाथों से मदिरा पिलाऊंगी महाराज!
हम भी उस विशेश मदिरा का स्वाद चखने को बेचैन हैं। महारानी!
रानी ने एक प्याले में डालकर मदिरा मेरी तरफ बढ़ाई!
यहलो महाराज!
लाओ रानी!
मैं एकही सांस में सारी मदिरा पी गया!
और पीते ही....
अरे ये मेरा सिर क्यों चक्करा रहा है मुझे क्या होता.. अह जा रहा है।.. अह..
राज-दरबार की थकान की वजह से सिर भारी हो गया होगा!

Scan & editing by Rahul Dubey

ओह, तो इसका मतलब तुम्हारे सौतेले भाई से मिलकर महारानी ने यह चाल चली!
हां मित्र!
तुम चिन्ता ना करो मित्र मैं हर संभव तरीके से तुम्हारी मदद करूंगा! कहो तो आज ही तुम्हारे राज्य पर चढ़ाई कर दूं!
जैसा ठीक समझो!
इधर बसन्त ने भी, प्रजा के और सेना के कुछ विश्वास पात्र लोगों को महाराज के बारे में बतला दिया!
क्या? तुम सच कह रहे हो महाराज वीरसेन अभी ज़िन्दा हैं।
बिलकुल ज़िन्दा हैं!
हम ऐसे न्याय प्रिय राजा के लिए अपने प्राणों की भी आहुती दे सकते हैं।
शाबाश! सैनिक! अब पाप का अन्त होने ही वाला है।
जब बसन्त ने बहुत से सैनिकों और प्रजा के लोगों की प्रतिक्रिया जान ली तो उसने राजा को अवगत कराने के लिए एक पत्र लिखा।
महाराज, राज्य के ज्यादातर सैनिक और प्रजावासी आपके साथ हैं। आप पुर्णिमा वाले दिन अपने मित्र राजा के साथ आक्रमण कर दें। आपका सेवक बसन्त।

उसने एक प्रशिक्षित सन्देश वाहक पक्षी लिया और उसके पैरो में सन्देश बांध कर उड़ा दिया!
कबूतर अपनी मंजिल की ओर उड़ने लगा।
लेकिन वह सन्देश वाहक पक्षी शक्ति सिंह की नज़रो से ना बच सका।
ओह! सन्देश वाहक पक्षी इसके पन्जो में क्या बंधा है।
तुरन्त ही शक्तिसिंह ने पास ही रखा धनुष-बाण उठाया और एक तीर धनुष पर चढ़ा कर पक्षी की तरफ छोड़ दिया!
अगले ही पल सन्देश वाहक पक्षी नीचे आ गिरा!
देखता हूँ क्या सन्देश है इसके पंन्जो में!
और जब शक्ति सिंह ने पत्र पढ़ा तो उसका मुँह खुले का खुला रह गया।
क्या? महाराज वीरसेन ज़िन्दा हैं!

अगले ही पल शक्ति सिंह वह पत्र लेकर महारानी रूपा के आगे उपस्थित था।

इसका मतलब महाराज ज़िन्दा हैं। हमें उस मछुआरे ने गलत खबर दी वो जरूर महाराज का गुप्तचर है।

जल्दी कुछ सोचो प्रिय! कहीं वीरसेन अपने मित्र चन्द्रदेव के साथ मिल कर हमारे ऊपर आक्रमण न कर दें! वर्ना सब कुछ ही समाप्त हो जायेगा!

चिन्ता मत करो प्रिय! बाज़ी अभी भी हमारे हाथ में हैं।

वो किस तरह प्रिय! रानी!

जब तक राजकुमारी कंचना हमारे पास हैं। महाराज या अन्य कोई हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता! वो हमारे हाथ में एक अचूक हथियार है।

ओह, यह तो मैं भूल गया था कि अभी राजकुमारी हमारे हाथ में हैं।

अब तुम उस मछुआरे और कंचना को बन्दी बना डालो!

तुम ठीक कह रही हो! प्रिय रानी! अभी प्रबन्ध करता हूँ!

और फिर अगले कुछ ही पलों में राजकुमारी कंचना शक्ति सिंह की कैद में थी!
दुष्ट चाचा, भगवान सब देखता है। तू कुत्ते की मौत मरेगा!
इस समय इनसे उलझने का मतलब है मौत..! मैं
हा.. हा.. हा.. ये तो तुम्हें वक्त बतायेगा!
उधर वीरसेन ने अपने मित्र चन्द्रदेव की मदद से मगधराज्य पर आक्रमण कर दिया!
बचाओ!
आह
आह
अः
Scan & editing by Rahul Dubey
कुछ ही सैनिक ऐसे थे जो शक्तिसिंह के बहलाने में आकर राजा वीरसेन के खिलाफत कर रहे थे। और जल्द ही उन्होंने ने हथियार डाल दिये!
हमें क्षमा करें महाराज! हम धन के लालच में आकर युद्ध कर बैठे!
मुझे पता है इसमें तुम्हारा कसूर नहीं है मैं तुम्हें क्षमा करता हूं।

मैं अब उस दुष्ट रानी और अपने सौतेले भाई का जिवित नहीं छोड़ूंगा!
अब महाराज वीरसेन रानी रूपा के सामने थे।
कमीनी! चुड़ैल! अब तू मेरे हाथ से नहीं बच सकती! धोखेबाज़
अः तुम!

राजा वीरसेन की बात सुन रानी रूपा जोर से हंसीं...
हा..हा..हा.. मूर्ख राजन तुमने क्या मुझे मूर्ख समझ रखा है। यह मत भूलो तुम्हारी बेटी कंचना मेरी कैद में है।
म..मेरी पुत्री! तुमने उसे कैद किया! तुम्हारी यह हिम्मत!

हा..हा..हा.. सब पता चल जायेगा राजन! पहले अपने हाथों में थमी तलवार तो फेंक दो! वर्ना....

असहाय राजा ने पुत्री मोह में आकर तलवार नीचे फेंक दी!
जाने किस हाल में होगी मेरी बच्ची! कमबख्त रानी!
मगर राजा का ऐसा सोचना उसकी भूल थी.....

क्यों कि समय बसन्त शक्ति सिंह की कैद में फंसी राजकुमारी कंचना को बचाने के प्रयास में था।

ऐसा सोचकर बसन्त एकदम शक्ति सिंह और सैनिको के सामने कूद पड़ा

शक्ति सिंह का आदेश पाते ही सब सैनिक अपनी-२ तलवार सम्भाले बसन्त पर टूट पड़े!

पर बसन्त का एक-एक वार उन पर भारी था

हर वार में बसन्त उनके लिए कहर था।

क्यों कि उसे पता था। उनके हाथ आने का..

एक ही मतलब उसकी और राजकुमारी की मृत्यु

शक्ति सिंह ने तुरन्त ही अपने घोड़े की तरफ सरपट दौड़ लगा दी....

राजकुमारी अब हमें यहां ज्यादा देर रुक कर समय व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए! उधर महाराज महल में आपको ना पाकर व्याकुल हो रहे होंगे!
तुम ठीक कहते हो बसन्त आओ हम महल की तरफ चलें!

दोनों जल्दी से पास ही खड़े शक्ति सिंह के घोड़े पर बैठे और महल की तरफ चल पड़े!

इधर महल में रानी रूपा ने राजा वीरसेन को अपने दो सैनिकों की मदद से बन्दी बना लिया था....
पहले हमारी जरा सी असावधानी के कारण तुम मरने से बच गये। लेकिन इस बार शक्ति सिंह के वापस आते ही तुम्हें ऐसी मौत मारेंगे की मौत भी कांप उठेगी!
तुम मेरे साथ जो इच्छा हो कर लो मगर कृपया करके मेरी पुत्री को कुछ मत करना!

Scan & editing by Rahul Dubey

मगर कंचना ने झपट कर उसके बाल पकड़ लिये!
अपने अपराध का दण्ड पाये बगैर कहां भागी जा रही हो। चुड़ैल!
तब तक बसन्त राजा के साथ उनके करीब पहुंच चुका था!
कल नगर वासियों के सामने चौराहे पर फांसी पर लटका दिया जायेगा।
रानी रूपा के लाख क्षमा मांगने के बाद भी राजा ने उसे क्षमा नहीं किया....
और अगले दिन लोगों की भीड़ के सामने रानी रूपा को चौराहे पर फांसी पर लटका दिया गया। फिर राजा वीरसेन ने अपना खोया राज्य दोबारा सम्भाल लिया।
महाराज! अब इस महल का अतिथि-सुख प्राप्त करते-२ बहुत दिन हो गये हैं अब मुझे आज्ञा दीजिए!
तुम जाने की सोच रहे हो बसन्त! हम तुम्हें सदा के लिए बन्दी बनाकर रखने की सोच रहे हैं।
मतलब महाराज!
मतलब ये है। हमने फैसला कर लिया है। राजकुमारी कंचना से तुम्हारा विवाह कर दिया जाये!

Printed at: Sarla Udyog, 44, Chandni Chowk, Delhi-6, Ph: 3270676, 3271436

रोयल कॉमिक्स

की आगामी भेंट

चाचा चंपक लाल
और
मिनी हरिहर

चुटकल-मुटकल
और
गालिबियन

प्रत्येक का मूल्य 5/-

लाख टके की चौरपाई

स्वर्ग की सैर

प्रकाशक
○ गीयल पाकेट बुक्स ○
९१, बापू मार्किट फव्वारा
दिल्ली-110006

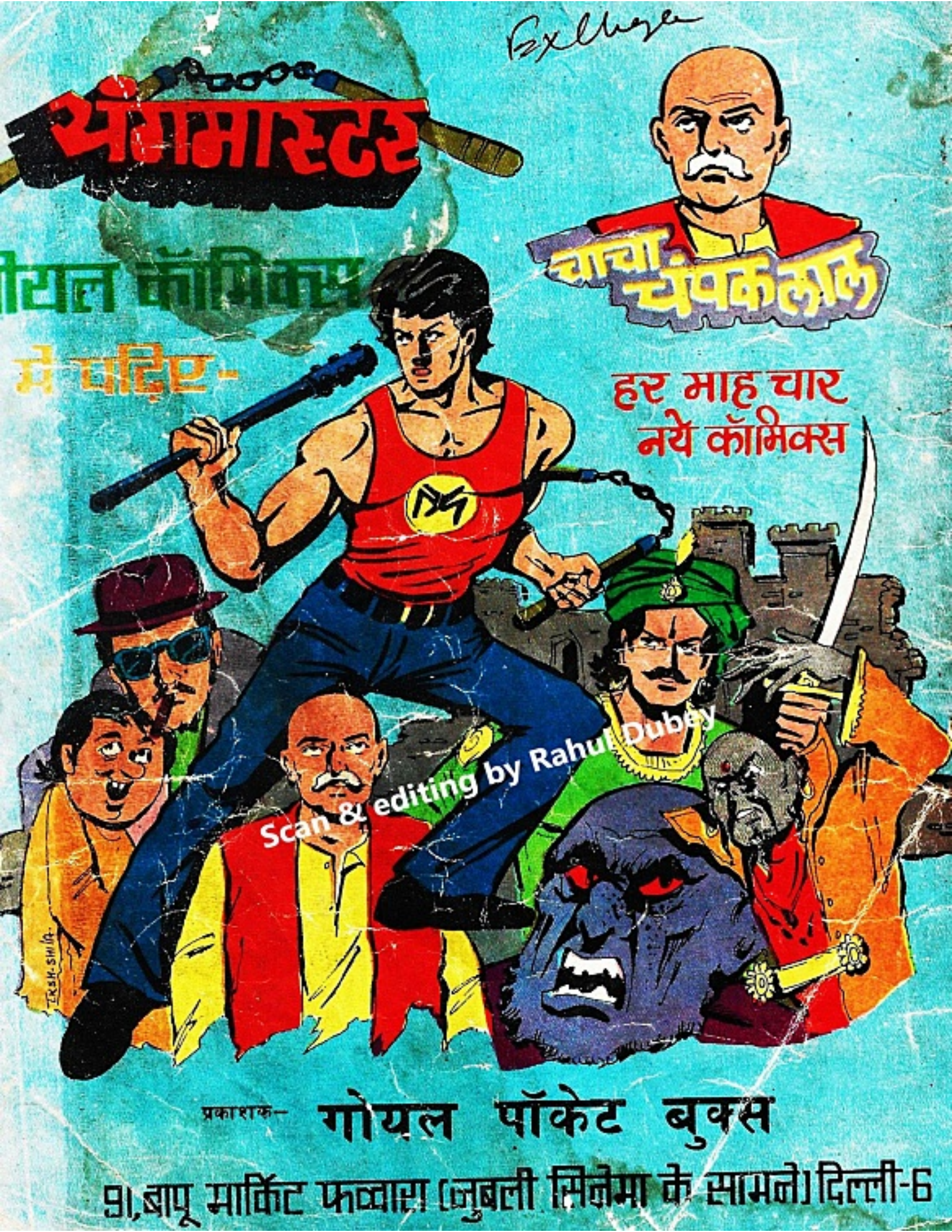
अंगमास्टर
चाचा चंपकलाल
गोयल कॉमिक्स
में चढ़िए-
हर माह चार
नये कॉमिक्स
Scan & editing by Rahul Dubey
प्रकाशक- गोयल पॉकेट बुक्स
9।, बापू मार्किट फव्वारा (जुबली सिनेमा के सामने) दिल्ली-6